9

मसीह के दुखों में सहभागी
(1 पतरस 4:12-19)

फिलिप्पीन के एक धार्मिक गुट में एक दिलचस्प प्रथा है जिसे आप ने समाचार पत्र में पड़ा होगा। हर साल इस्टर के आस पास उनमें से कुछ लोग अपनी पीठ पर क्रूस को बांध लेते हैं और अन्य लोग उनके पीछे जलूस के रूप में चलते हैं। एक निश्चित स्थान पर पहुंचकर, क्रूस को बांधे लोगों को कील ठोंककर हवा में कुछ देर के लिए उठा दिया जाता है। ऐसा करने वाले लोग भी स्पष्टतया निष्कपट हैं, परन्तु मुझे पक्का विश्वास है कि ''मसीह के दुखों में सहभागी'' होने के वाक्यांश का अर्थ बिल्कुल अलग है। जब मसीही लोग 4:13 वाले मसीही लोगों द्वारा सहभागी होने के अर्थ में, उसके दुखों में सहभागी होते हैं, तो यह इसलिए है कि वैसे ही जीवन जीते और सिखाते हैं जैसे प्रभु ने जिया और सिखाया था।

दुख आने पर चकित न हों (4:12-15)

अपने पाठकों के दुख सहने के पतरस के चार स्पष्ट हवालों (1:6, 7; 3:13-17; 4:12-19; 5:9, 10) में से 4:12-19 का विवरण सबसे स्पष्ट है। आयत 12 के सुर और विषयवस्तु के अचानक बदलाव का कारण बताने के लिए कुछ लोग इतनी दूर चले गए हैं जैसे वे यह कहना चाहते हों कि पतरस ने अपना पत्र 4:11 तक लिखा और फिर इसे एक ओर रख दिया, की बाद में सताव के गहरे प्रकोप का समाचार पाने के बाद इसे लौटकर पूरा करेगा। ऐसा सही है या नहीं, परन्तु आयत 11 की तारीफ़ आयत 11 और 12 के बीच के उसके विचार में रुकावट के सुझाव का समर्थन करती है।

ढंग और साधन बदल जाएंगे पर जब भी लोग यीशु की शिक्षा और जीवन के अनुसार सिखाने और जीने का गम्भीर प्रयास करेंगे, तो उन्हें सताव सहना ही पड़ेगा। 2 तीमुथियुस 3:12 में पौलुस स्पष्ट था: ''पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे।'' कितना विरोधाभास है कि शांति का राजकुमार कहे, ''क्या तुम समझते हो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हूं? मैं तुम से कहता हूं; नहीं, बरन अलग कराने आया हूं'' (लूका 12:51)। पतरस ने अपने पाठकों को कुछ व्यवहारिक परामर्श दिया जो उन सब मसीही लोगों के लिए जिन्हें यीशु को मसीह मानने के कारण दुख उठाना पड़ता है एक मुल्यवान स्रोत का काम कर सकता है।

परीक्षाओं की अपेक्षा की जाती है

ऐसा कोई स्पष्ट कारण नहीं है कि मसीही लोगों को परेशान या नीच क्यों बनना पड़ता है। पहली सदी के एशिया माइनर में पुरुषों और स्त्रियों ने मसीह को अच्छे विश्वास में ग्रहण

किया था। उन्होंने उसे परमेश्वर का पुत्र होना माना था; उन्हें ऐसे लोग मिले थे जो उन्हें उनके विश्वास में समर्थन और प्रोत्साहन देते थे। उनका लक्ष्य सब लोगों से भाइयों की तरह व्यवहार करना, वह विनाशकारी और कामूक पापों से दूर रहना, अपने परिवारों का पालन पोषण अच्छी तरह करना और कठिन परिश्रम से ईमानदारी की कमाई करना था। उन्हें सताव की अपेक्षा करने का कोई कारण नहीं था। वे समझ नहीं सकते थे कि उनके साथ यह क्यों हुआ पतरस ने भी वास्तविक व्याख्या नहीं बताई क्योंकि उसने केवल इतना दावा किया कि यह एक अटल सच्चाई है (4:12)।

रोमी सम्राज्य की आरम्भिक शताब्दियों में मसीही लोगों पर सताव क्यों हो रहा था? गत एक सौ या इससे अधिक वर्षों में विद्वान लोगों ने इस प्रश्न का उत्तर देने के प्रयास में प्राचीन दस्तावेज़ों की पड़ताल करते हुए कई किताबें लिखी हैं। यह इसमें आंशिक रूप में सफल हो पाए हैं। कई तो मसीही लोगों का विरोध इसलिए करते थे क्योंकि वे नये लोगों को जीतने का प्रयास करते थे। ओरिगन नामक तीसरी सदी के एक लेखक ने किसी सैल्सस नामक व्यक्ति को उत्तर देने के लिए जो मसीही लोगों का कट्टर शत्रु था एक पुस्तक लिखी। ओरिगन की पुस्तक तो है परन्तु हमें सैल्सस की लिखी बातों का ओरिगन के लम्बे उद्धहरणों से ही पता चलता है। सैल्सस ने मसीही लोगों का वरणन ''कपड़े पर कढ़ाई करने वाले, मोची, धोबी और सबसे अनपढ़ और देहाती गंवार'' के रूप में किया है। उसने कहा कि वे ''अकेले में बच्चों और उनके साथ कुछ मूर्ख स्त्रियों को'' यह मनाने के प्रयास में कि उन्हें जीने का ढंग पता है शिकार बनाते थे। कोई संदेह नहीं कि दूसरे लोग मसीही लोगों की आलोचना और सताव में सैल्सस के साथ इसलिए मिल गए क्योंकि उन्हें वे पारिवारिक जीवन में गड़बड़ करने वाले समझा जो उनके निर्बोद्ध बच्चों और भोली भाली पत्नियों को यीशु का अंगीकार करवाने की कोशिश करते थे।

मसीही लोगों से घृणा करने के अविश्वासी लोगों को और कारण मिले हो सकते हैं पर यह पक्का है कि एक महत्वपूर्ण कारण इतना आसान था कि वे भले लोग थे। झूठ बोलने वालों, चोरी करने वालों और अपने साथी व्यक्ति से दुराचार करने वालों के पापों की तुलना नैतिक रूप से सही और शुद्ध जीवन जीने वालों से करने पर उनके लिए कोई बहाना नहीं होता। यूहन्ना ने एक महत्वपूर्ण कारण बताया जिससे हर युग में मसीही लोगों को अधर्मी लोगों के क्रोध को महसूस किया है: ''और कैन के समान न बनें, जो उस दुष्ट से था, और जिसने अपने भाई को घात किया: और उसे किस कारण घात किया? इस कारण कि उसके काम बुरे थे, और उसके भाई के काम धर्म के थे। हे भाइयो, यदि संसार तुम से बैर करता है तो अचम्भा न करना'' (1 यूहन्ना 3:12, 13)। जब मसीही लोग उस जीवन के मार्ग के लिए जो यीशु ने जीया अपनी बात पर स्थिर रहते हैं तो उन्हें अपने ऊपर भयंकर परीक्षाओं के आने को अनोखी बात नहीं समझना चाहिए।

उसके दुखों में सहभागी होना आनन्द का कारण है

पतरस के लिए मसीही लोगों द्वारा दुख उठाने का कारण उतना महत्वपूर्ण नहीं था जितना उसका परिणाम। जब उन्हें सताया जाता और उनकी परीक्षा की जाती थी, उन्हें मसीह के दुखों में सहभागी होने का सोभाग्य मिल रहा था (4:13)। यह आनन्द का कारण था। इस संसार में मसीह के साथ दुख उठाने का आनन्द उसकी महिमा के प्रकाश की तैयारी के लिए था। फिर

महिमा के आने पर वर्तमान आनन्द में अकथनीय आन्नद में बदल जाना था।

यह सोच कि मसीही लोग अपने ही दुखों के द्वारा परमेश्वर के पुत्र के जीवन और सेवकाई में उससे जुड़े हैं वचन में एक और जगह आता है। पौलुस ने लिखा, ''अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूं, जो तुम्हारे लिए उठाता हूं, और मसीह के क्लेशों की घटी उस की देह के लिए, अर्थात कलीसिया के लिए, अपने शरीर में पूरी किए देता हूं'' (कुलुस्सियों 1:24)। शायद पौलुस कह रहा था कि परमेश्वर के आज्ञापालन का वही जीवन जिससे यीशु को दुख मिला उसके चेलों के लिए भी दुख लाएगा। मसीह में काम किया जाना आवश्यक है। जब परमेश्वर के लोग सुसमाचार का प्रचार करते हैं और भक्तिपूर्ण जीवन बिताते हैं, तो एक अर्थ में, वे उस काम को पूरा कर रहे होते हैं जिसे मसीह ने किया है। इसी प्रकार जब वे इसके लिए सताए जा रहे होते हैं, तो वे उसके दुख सहने को पूरा कर रहे होते हैं। परमेश्वर के पुत्र के काम और दुख उठाने में सहभागी होना आनन्द का कारण है।

परमेश्वर का आत्मा और महिमा आपके ऊपर है

नये नियम में मत्ती 5:1-12 वाले धन्य वचन के अलावा और धन्य वचन भी हैं। पहाड़ी उपदेश में यीशु ने कहा, ''धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहें'' (आयत 11)। हो सकता है कि इन शब्दों को दोहराते हुए पतरस को प्रभु की बात याद आ रही हो। जो भी हो यह दिलचस्प है कि 4:14 में अनुवादित शब्द ''निन्दा'' और ''धन्य'' मत्ती में भी वही है।

जब मसीही अन्याय से दुख उठाते हैं, तो पतरस ने कहा कि ''महिमा का आत्मा, जो परमेश्वर का आत्मा है, तुम पर छाया करता है'' (4:14)। परन्तु यूनानी भाषा महिमा पर अधिक ज़ोर देती है। प्रेरित कुछ इस प्रकार कह रहा होगा: ''परमेश्वर की महिमायुक्त उपस्थिति और परमेश्वर के आत्मा का वातावरण तुम्हारे ऊपर हो।'' पुराने नियम में ''यहोवा की महिमा'' परमेश्वर की उपस्थिति के इस पवित्र वातावरण का सुझाव देती है। उदाहरण के लिए निर्गमन 24:15, 16 में हम पढ़ते हैं, ''तब मूसा पर्वत पर चढ़ गया, और बादल ने पर्वत को छा लिया। जब यहोवा के तेज ने सीनै पर्वत पर निवास किया।'' बाद के यहूदी लेख में *shekinah* शब्द का इस्तेमाल परमेश्वर की महिमा की भयदायक उपस्थिति को दर्शाने के लिए किया जाता था। शायद पतरस यही कह रहा था कि एक आत्मिक अर्थ में, परमेश्वर की उपस्थिति का महिमायुक्त प्रभाव उसके नाम के लिए इन मसीही लोगों द्वारा अपमानित या ज़लील होने पर होता था।

भलाई के लिए दुख उठाएं, नीच बात के लिए कभी नहीं

पवित्र जीवन की पुकार 1 पतरस में बार बार आने वाली स्थायई है। यह पुस्तक के सुर के लिए उतनी ही बुनियादी है जितना दुख सहने और मसीह के वापस आने के विषय में। प्रेरित ने 1:14 से पवित्रता के लिए अपील की। 2:12 का अर्थ 4:15 के अर्थ जैसा ही है। 2:20 में सेवकों से और 3:1, 2 में पत्नियों से पवित्र व्यवहार करने का विशेष आदेश दिया गया। 3:8-17 में फिर से यह विचार हावी रहता है।

''तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर, ... होने के कारण दुख न पाए'' पतरस ने (4:15)

में कहा। उसने और सामान्य शब्दों में जोड़ दिया कि मसीही व्यक्ति को दुष्कर्म करने वाले के रूप में दुख नहीं उठाना चाहिए। यह सब शब्द बिल्कुल सीधे और स्पष्ट हैं, परन्तु सूची में चौथा शब्द काफ़ी कठिन है। NASB में ''troublesome meddler'' है। इसका अनुवाद ''meddler'' अर्थात टांग अड़ाने वाला करके, NIV में ''दूसरों के मामलों में टांग अड़ाने वाला'' के KJV द्वारा ठहराए पराम्परिक अर्थ का ही अनुसरण किया है। यूनानी शब्द जो इस अनुवाद के पीछे है न तो नये नियम में और न इससे पहले किसी संसारिक लेख में इस्तेमाल होता था। कुछ लोग यह सुझाव देते हैं कि पतरस ने इस शब्द को बनाया। सुझाए गए अर्थों के बीच ''mischief-maker'' (RSV) अर्थात, ''जादूगर'' जो चुराई गई चीज़ों को छिपा लेता है, एक लोभी व्यक्ति और क्रांतिकारी। वास्तव में यूनानी भाषा के बेहतरीन छात्रों को भी पक्का नहीं है कि इस शब्द का क्या अर्थ है।

उसके नाम को अपनाने से लज्जित न हों (4:16-18)

परमेश्वर की संतान के लिए दुष्कर्म करने वाले के रूप में दुख उठाना लज्जा की बात है, पर पतरस ने कहा कि मसीही के रूप में दुख उठाना, परमेश्वर को महिमा देने का अवसर है (4:16)। नये नियम में ''मसीही'' शब्द केवल तीन बार आया है। पतरस ने इसे एक बार और लूका ने दो बार इस्तेमाल किया है (प्रेरितों 11:26; 26:28)। यह बिल्कुल सम्भव है कि अविश्वासियों द्वारा पहली बार इस्तेमाल किए जाने पर ''मसीही'' मज़ाक और उपहास का शब्द था, परन्तु अक्सर ऐसा होता है कि लोग अपने शत्रुओं के गुणवाचक नाम लेकर उन्हें विशिष्टता से पहनते हैं। किसी व्यक्ति का उपहास करना कठिन होता है जब वह उसी शब्द को अपना ले जो उसे नीचा दिखाने की इच्छा से बनाया गया था। जो लोग यह विश्वास करते हैं कि यीशु ही मसीह है और उसकी बात मानकर प्रसन्न होते हैं, उनके लिए मसीही नाम के बराबर व्याख्यात्मक शब्द और कोई नहीं है।

आरम्भिक परिवर्तितों ने तुरन्त मसीही नाम को अपना लिया, परन्तु उन्हें यह समझने में कठिनाई आई कि परमेश्वर ने उन पर दुख क्यों आने दिया। ऐसा लगा होगा कि न्याय ने अपना सामान बांध लिया और संसार से निकल गया है। कई बार हमें ऐसा ही लगता है। निर्दोष लोग दुख उठाते हैं और भले लोगों को उन लोगों द्वारा प्रताड़ित किया जाता है जिनके पास शक्ति, धन और प्रभाव होता है। यह शिकायत कि ''संसार में न्याय नहीं रहा'' अय्यूब से भजनों में और यिर्मयाह तक सुनाई देती है (देखें अय्यूब 24:1; भजनसंहिता 10; यिर्मयाह 12:1, 2)। बेशक एशिया माइनर के मसीही लोग परेशान थे कि परमेश्वर ने उनके सताने वालों का न्याय क्यों नहीं किया। पतरस का उत्तर था कि परमेश्वर उनका न्याय करेगा। यह उसके समय पर और उसके ढंग से होगा, परन्तु न्याय करने वाला वही होगा, और न्याय वही करेगा (4:17)।

यह अजीब तो लग सकता है, पतरस ने इस तथ्य से कि उसके आरम्भिक पाठक दुख उठा रहे थे प्रमाण देखा कि परमेश्वर का न्याय दुष्ट लोगों पर आएगा। परमेश्वर का न्याय आरम्भ हो चुका था और यह परमेश्वर के घर से ही आरम्भ हुआ था। हबकूक नबी के दिनों की तरह, परमेश्वर अपने लोगों को ताड़ने और डांटने के लिए उसे प्रभु के रूप में मानने वालों की अपेक्षा अधिक दुष्टों का इस्तेमाल कर रहा था। जैसे हबकूक ने यह बहुत स्पष्ट किया कि परमेश्वर समय

आने पर कसदियों का न्याय करेगा, पतरस ने अपने पाठकों को आश्वस्त किया कि परमेश्वर उन्हें सताने वालों का न्याय करेगा। हमें फिर याद दिलाया जाता है कि पतरस और उसके पाठकों के लिए सब बातों का अन्त निकट था (4:7)। तब भी, उन्होंने आग पर सोने के परखे जाने की तरह अपने लोगों को दण्ड देकर सुधारने, ढालते और तैयार करते उसकी बलिष्ट भुजा के प्रमाण को देखा (1:6, 7)। उसका न्याय आरम्भ हो चुका था। पतरस ने घुमाते हुए पूछा कि उनका अन्त कैसा होगा जिन्होंने परमेश्वर के सुसमाचार की आज्ञा नहीं मानी? यह पक्की उम्मीद थी कि जिससे उन्हें शांति मिली और उन्हें अपने संघर्ष में बने रहने और अपने संसार को बदलने की सामर्थ मिली। जिन्हें अन्त समय में जीने की समझ है वे जीवन का हर निर्णय अलग दृष्टिकोण से लेते हैं।

यदि मैं सही हूं तो प्रभु की कलीसिया को प्रभु के वापस आने की अपनी उम्मीद के बारे में अपने अन्दर झांकने की आवश्यकता है कि क्या सचमुच इसे उम्मीद है। आइए मान लेते हैं कि समकालीन संसार में गम्भीर मसीही लोगों का सामना करना पड़ता है, परन्तु पतरस के पत्र के आरम्भिक पाठकों द्वारा सहे जाने वाले सताव की तुलना में, हम में से कइयों पर आने वाले सताव कुछ भी नहीं हैं। शायद इसी कारण आधुनिक संसार पहली सदी के संसार की अपेक्षा अधिक दयालु और सहिशुणु है। यह सम्भावना है, परन्तु अधिक सम्भावना यह है कि संसार आधुनिक कलीसिया का विरोध और सताव इतना कम इसलिए करता है क्योंकि कलीसिया को अपने कार्य की अनिवार्यता की इतनी ही समझ है।

4:18 में पतरस का नीतिवचन 11:31 को दोहराना, ''यदि धर्मी व्यक्ति ही कठिनाई से उद्धार पाएगा, तो भक्तिहीन और पापी का क्या ठिकाना?'' हम से बहुत कम कहेगा यदि हमें धर्मी के उद्धार की कठिनाई की ना समझ है और न धर्मी और पापी के न्याय की भावना की। यदि आज कलीसिया को नया बनना है तो यह तभी होगा जब हम आरम्भिक मसीही लोगों की तरह प्रभु के वापस आने की उम्मीद और उत्सुकता रखेंगे। ''सब बातों का अन्त निकट है।'' ''आमीन। हे प्रभु यीशु आ।''

अपने आपको विश्वासयोग्य सृष्टिकर्त्ता को सौंपने से न डरें (4:19)

फिर पतरस उस मूल नियम पर आ गया कि उसके पाठकों को उस दुख को कैसे लेना चाहिए जो उनके मसीही बनने के समय से ही उन पर राज कर रहा था। इसमें दो अलग अलग आज्ञाएं थीं।

अपने आपको विश्वासयोग्य सृष्टिकर्त्ता को सौंप दो

पतरस ने उन्हें अपने प्राणों को विश्वासयोग्य सृजनहार को सौंप देने के लिए कहा (4:19)। किसी को कुछ सौंप देने का अर्थ उसके सपुर्द कर देना है। इस आयत में अनुवादित शब्द ''सौंप दें'' वाला ही यूनानी शब्द 2 तीमुथियुस 2:2 में पौलुस ने इस्तेमला किया है ''और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के साम्हने मुझ से सुनी है, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे।''

जब तक हम व्यस्क होते हैं तब तक हमें अपने में से कइयों को अपने आपको दूसरों को सौंप देने के बुरे अनुभव हो चुके होते हैं। कई बार हम से विश्वासघात हुआ होता है। अपने

आपको किसी भी व्यक्ति या वस्तु को सौंप देना कठिन से कठिन होता जाता है। हमें लगता है कि जितना हम किसी दूसरे पर कम निर्भर होंगे और अपने आप पर अधिक भरोसा रखेंगे उतना ही बढ़िया हो सकता है। बेशक, यहां एक मुश्किल खड़ी होती है: अन्तिम विषलेषण में हम अपने आप में परिपूर्ण नहीं हैं। ''सब प्राणी घास हैं, उनकी शोभा मैदान के फूल के समान है'' (यशायाह 40:6)। 1:24 में पतरस ने इसी आयत को दोहरया। वह अय्यूब से बेहतर ढंग से अपने पाठकों को उनके दुख उठाने के सभी सवालों का जवाब नहीं दे सकता था, परन्तु उसे मालूम था कि केवल एक है जिसको हम अपने आपको सौंप सकते हैं। जब पतरस ने मसीही लोगों से अपने आपको विश्वासयोग्य सृजनहार को सौंप देने का आग्रह किया, तो आवश्यक रूप में उसने उन्हें अय्यूब का निष्कर्ष दिया: ''मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती'' (अय्यूब 42:2)।

भलाई करते रहें

NASB में 4:19 के अन्तिम वाक्यांश को NIV से थोड़ा अलग अनुवाद किया गया है। NASB में इसका अनुवाद ''अपने प्राणों को जो सही है उसे करते हुए विश्वासयोग्य सृजनहार को सौंप दें,'' NIV में ''अपने आपको अपने विश्वासयोग्य सृजनहार को सौंप दें और भलाई करते रहें।'' अर्थ यह है कि कोई अपने आपको भलाई करने के अर्थ से परमेश्वर को सौंपता है। दोनों कार्य एक साथ होते हैं। NIV में लगता है कि यह दो अलग अलग बातें हैं यानी अपने आपको विश्वासयोग्य सृष्टिकर्त्ता को सौंपना; इसके अलावा, भलाई करने में लगे रहना। अपने आपको परमेश्वर को सौंपना कोरी कल्पना नहीं है। व्यक्ति अपने भले कामों से अपने आपको परमेश्वर के सपुर्द करता है। बड़ी बात यह है कि भले कामों से अपने आपको परमेश्वर को सौंपकर वह सीखता है। मैं बड़ी बड़ी कल्पनाओं से कभी प्रभावित नहीं हुआ। मित्रों की संगति में अपनी बाइबलें खोलकर चक्र में बैठने के समय परमेश्वर से जोश के साथ प्रेम करना कितना अद्‌भुत है, परन्तु हमें संसार में फैंके जाने पर हम कितने शैतानी हो सकते हैं।

यद्यपि तालमुड़ नाम की यहूदी पुस्तक हम में से कइयों के लिए बेकार लगेगी, परन्तु इसमें कुछ बड़ी समझ पाई जाती है। एक बार एक शिष्य यह प्रश्न लेकर रब्बी के पास पहुंचा, ''मैं प्रभु से प्रेम करना कैसे सीख सकता हूं?'' समझदार रब्बी ने उत्तर दिया, ''कल्पना करो कि यदि तुम प्रभु को वैसे प्रेम करते जैसे करना चाहते हो तो क्या करते। ऐसा ही करो, तो तुम उससे प्रेम करोगे।'' अपने पाठकों को पतरस की ताड़ना उससे अलग नहीं लगती। उसने कहा, ''अपने आपको परमेश्वर को सौंप दो।'' हम अपने आपको परमेश्वर को कैसे सौंप सकते हैं? हम किए जाने वाले कामों के द्वारा अपने आपको सौंपते हैं। कम से कम यह उतना ही सच है कि हमारे कामों से हमारा व्यवहार पता चलता है जितना यह कि हमारा व्यवहार हमारे कामों को तय करता है।

सारांश

''कठिन अनुभव'' जिनका सम्बन्ध 1 पतरस की बातों से बहुत है हमारे सामने 4:12-19 में वह ज़ोर है जो पत्र में और कहीं नहीं मिलता। पत्र में अन्य स्थानों की तरह पतरस ने इन मसीही

लोगों को सताव का जवाब दो तरह से देने के लिए कहा: (1) अपने समर्पण को पवित्र जीवन जीने में नया कर लें और (2) प्रभु के आने की उम्मीद करें। यह बात नहीं है कि इन आयतों का विषय-वस्तु पत्र के शेष भाग से अलग है, परन्तु संदेश यहां उससे अधिक आवश्यक है। उनकी परीक्षाओं की कठोरता ने पतरस को अपने पाठकों को उस न्याय का स्मरण दिलाने को विवश किया, वह न्याय जिसे वे आरम्भ होते देख सकते थे। पतरस ने एक प्रश्न पूछकर छोटी सी बड़ी बात का तर्क दिया। यदि मसीही लोगों पर परमेश्वर का शुद्ध करने का न्याय कठिन है, तो सुसमाचार की आज्ञा न मानने वालों के लिए यह कितना कठिन होगा?

यह आयत आज की मसीह की कलीसिया के लिए एक बड़ा संदेश है। संदेश यह है: हम अन्तिम समयों में रहते हैं। प्रभु शीघ्र आ रहा है। यदि हम अब उसके साथ दुख उठाएं तो हम धन्य लोग होंगे ताकि उसकी महिमा के प्रकट होने पर अति आनन्द कर सकें।